जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक

ककसाड़

वर्ष 11 अंक 104
नवंबर, 2024
मूल्य : 25/- रुपए

ककसाड़
राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

ISSN 2456-2211

दिल्ली से प्रकाशित

ककसाड़

(जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक)

नवंबर 2024 **वर्ष-11 • अंक-104**

संस्थापना वर्ष 2015

प्रबंध एवं परामर्श संपादक
कुसुमलता सिंह

संपादक
डॉ. राजाराम त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
फैसल रिजवी, अपूर्वा त्रिपाठी

•

ग्राफिक डिजाईन
रोहित आनंद

• मुख्य कार्यालय एवं रचनाएँ भेजने का पता •

सी-54 रिट्रीट अपार्टमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110092

फोनः 9968288050, 011-22728461

•

• संपादकीय कार्यालय •

151, डी.एन.के. हर्बल इस्टेट, कोण्डागाँव, छ.ग.-494226

फोनः 9425258105, 07786-242506

ई-मेल : kaksaadeditor@gmail.com
kaksaadoffice@gmail.com

वेबसाइट : www.kaksad.com

मूल्य : **रु. 25** (एक प्रति), वार्षिक : **रु. 350/-** संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक : **रु. 500/-** वार्षिक (विदेश) : **$110** यू.एस. आजीवन व्यक्तिगत : **रु. 3000/-** संस्था : **रु. 5000/-**

संपादन-संचालन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'ककसाड़' पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

• ककसाड़ से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे • **कुसुमलता सिंह** स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक।

अनुक्रम

दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा पुरस्कृत

4. **संपादकीय**

साक्षात्कार

6. मानसिंह व्याम का गोंड आर्ट ऑस्ट्रेलिया के पीएम हाउस में... (**मानसिंह व्याम** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत)

लेख

9. बढ़ रहा है भाषाओं के लुप्त होने का संकट : **प्रमोद भार्गव**

13. हल्बा जनजातीय इतिहास, संस्कृति : **भागेश्वर पात्र**

19. बँगला भाषा की श्रीराम पाँचाली की सृजन-भूमि 'फुलिया' : **श्रीराम पुकार शर्मा**

22. गोंड राज्य के साहित्य : **डॉ. सुरेश मिश्र**

25. जब सुकरात ने ज़हर पिया : **श्रीयुत पं. विश्वम्भरनाथ जिज्जा**

कहानी

29. करवा चौथ : **कादम्बरी मेहरा**

31. बिंदी कुजूर के सपने और सवाल : **विद्याभूषण**

37. बुढ़ापे का सहारा : **डॉ. रंजना जायसवाल**

कविता/चुने हुए शेर

37. सुधीर केवलिया, 38. हरे प्रकाश उपाध्याय 40. नितेश व्यास, 40. राजेंद्र ओझा, 41. महेश अग्रवाल

शब्द-चित्र

42. विवाह आयोजन नया अनुष्ठान : **सौम्या पाण्डेय 'पूर्ति'**

संस्मरण

44. अंत भला तो : **डॉ. अशोक गुजराती**

लघुकथा

41. सच्चे नल की पहचान : **विनोद भट्ट**

पुस्तक समीक्षा

46. लकीरों का सफर : **ओमप्रकाश यती**

47. पंख का नुचना : **ताराचन्द 'नादान'**

43. **क्या है ककसाड़?**

12. **कहावतें**

33. **यादें**

49. **साहित्यिक समाचार**

आवरण कलाकृति - मानसिंह व्याम
(गोंड कलाकार) - भोपाल (म.प्र.)
मो. 99262-12848
काले और सफेद रंगों को अपने चित्रों में प्राथमिकता देते हैं।

संपादकीय

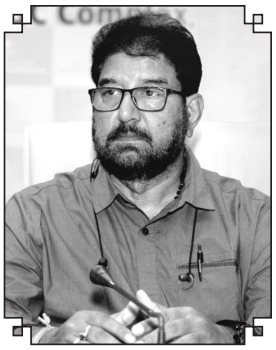

नवंबर के इस अंक के साथ ही ककसाड़ की पूरी टीम की ओर से आप सभी को धनतेरस, अनंत चतुर्दशी, दीपावली, गोवर्धन पूजा, भाई दूज, छठ पूजा आदि प्रकृति से जुड़े लोक पर्वों की बहुत-बहुत बधाई तथा शुभकामनाएँ। वैसे इस बार की दिवाली कुछ और भी खास कर सकते हैं, क्योंकि हम सबने यह तय किया है कि केवल मिट्टी के दीये जलाकर पर्यावरण का सम्मान करेंगे, और पटाखों की धूम, धमाके, धुएँ से यथासंभव बचे रहेंगे।

आखिरकार, हम रोशनी के इस त्योहार को मनाते हुए हमारे उस प्राचीन रिश्ते को फिर से जगाने की कोशिश कर रहे हैं, जो हमने सदियों पहले 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के उद्घोष के साथ प्रकृति, सत्य व प्रकाश के साथ बनाया था, और जिसे अब हम बड़ी तेजी से अनदेखा करते जा रहे हैं।

जी हाँ! दीपावाली की रोशनी इसी सत्य को ही तो उजागर करती है, और हमें बार-बार याद भी दिलाती है कि प्रकृति के बिना हम कुछ भी नहीं।

त्योहारों की लंबी श्रृंखला के अलावा प्रकृति परिवर्तन का महीना नवंबर हमें छाया, धूप, धूल की बेमिसाल मुफ़्त कंबो डील प्रदान कर रहा है। जिसके साथ ही हमें क्लाइमेट-चेंज के उपहार शीतलहर की सर्द हवाओं का स्वागत करने के लिए भी तैयार रहना होगा।

'क्लाइमेट-चेंज' बौद्धिक बहसों के दायरों से बाहर निकलकर कठोर भयावह हकीकत बन गया है। अप्रत्याशित मौसम-परिवर्तन ने हमें इस कदर प्रभावित किया है कि शायरों की भाषा में मौसम अब पूरी तरह बेईमान हो गया है। कहीं गर्मी में बाढ़ आई हुई है, तो कहीं मानसून सूखा-सूखा चला जा रहा है।

हमारे ही देश में ठंड के मौसम में गर्मी बढ़ जाने के कारण गेहूं के दाने सिकुड़ गए और पूरे देश के गेहूं का सकल उत्पादन सोलह प्रतिशत घट गया। यही हाल रहा तो दाने-दाने को तरसने वाली कहावत चरितार्थ हो जाएगी। गर्मी का आलम तो यह है कि कूलर,एसी सब जवाब दे रहे हैं मनुष्य, जानवर, पेड़ पौधे खेत सबके सब बढ़ती गर्मी के कारण पस्त पड़े हैं।

किसी एक मौसम की बात तो छोड़िए, अब तो हर मौसम अपना भयंकर चेहरा दिखा रहा है पर जरा ठहरिए यह तो केवल बानगी है, इसका भयंकरतम रूप देखना तो अभी भी शेष है। प्रसिद्ध पर्यावरणविद् चीफ सीटेल ने अपने उद्धरण :- "The Earth does not belong to us; we belong to the Earth" यानि कि "पृथ्वी हमारी नहीं है हम पृथ्वी के हैं" के जरिए पहले ही हमें चेताया था, लेकिन हमने उनकी चेतावनी को 'स्मार्ट' बनने और 'स्मार्ट-सिटी' बनाने के प्लान में हवा में उड़ा दिया।

अब आइए, अपने जनजातीय समाज की ओर देखें। वे तो हजारों सालों से प्रकृति के साथ सहजीवन के सूत्र साधते हुए जीते चले आए हैं, जबकि हम उनसे केवल इतना सीखने में सक्षम रहे हैं कि "किस तरह यह संतुलन नष्ट किया जा सकता है।" जनजातीय समाज के लिए, पर्यावरण का संरक्षण और संतुलित उपयोग सदैव उनके धर्म एवं कर्म का मूलाधार था। वे भूमि को माता मानते थे, जंगलों को जीविका व जीवन दाता, और नदियों को अपना परिवार। लेकिन हम प्रगति के इस आधुनिक युग में उनके सदियों के संचित पारंपरिक ज्ञान को एक 'रोमांटिक किस्से' की तरह या तो टाल देते हैं या फिर सिरे से ही खारिज कर देते हैं।

उपनिषदों का उद्धरण "भूमि माता पुत्रे अहं पृथिव्या" जब तक हम कहानियों में सुनते थे, तब तक ठीक था। अब हमें प्रॉपर्टी, कारखानों और गगनचुंबी इमारतों के लिए तो हर कीमत पर जमीन चाहिए न! हम तो ऐसी प्रगति चाहते हैं जहाँ पेड़ केवल शहरी नियोजन के नक्शों में मौजूद हों और नदियाँ सिर्फ इतिहास के किताबों में बहती हों।